Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

छात्राध्यापकों की उपस्थिति और नैतिक मूल्यों के मध्य संबंध का अध्ययन : शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के संदर्भ

माधुरी वर्मा

सहायक प्राध्यापक

श्रीराम महाविद्यालय, सारागांव, छत्तीसगढ़

परिचय

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान भविष्य के शिक्षकों को न केवल शैक्षणिक दक्षताओं से सुसज्जित करते हैं, बल्कि उन्हें नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का संवाहक भी बनाते हैं। छात्राध्यापकों की उपस्थिति (Attendance) को सामान्यतः शिक्षा-प्रक्रिया में उनकी संलग्नता और उत्तरदायित्व का सूचक माना जाता है। उच्च उपस्थिति अक्सर अनुशासन, आत्मनियंत्रण, प्रतिबद्धता और पेशेवर मूल्यों से जुड़ी होती है। दूसरी ओर, नैतिक मूल्य ईमानदारी, समयपालन, उत्तरदायित्व, सहयोग और संवेदनशीलता एक शिक्षक की पेशेवर सफलता और सामाजिक प्रभाव का अनिवार्य आधार हैं। इस संदर्भ में यह अध्ययन यह जांचने का प्रयास करता है कि क्या शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में छात्राध्यापकों की उपस्थिति और उनके नैतिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक संबंध मौजूद है। यह संबंध महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक की नैतिकता सीधे विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और विद्यालयी संस्कृति को प्रभावित करती है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

(a) नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg's Theory of Moral Development)- कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक निर्णय व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास के साथ विकसित होते हैं। नियमित उपस्थिति व्यक्ति की आत्म-अनुशासन एवं कर्तव्यपरायणता को प्रतिबिंबित कर सकती है, जो नैतिक विकास के उच्च चरणों से संबद्ध है।

(b) सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Bandura's Social Learning Theory)- बंडूरा के अनुसार व्यक्ति अपने सामाजिक पर्यावरण से सीखता है। संस्थान की उपस्थिति-नीति, शिक्षक का आदर्श व्यवहार और सहपाठियों की अनुशासनात्मक प्रवृत्ति नैतिक आचरण को प्रभावित कर सकती है।

(c) पेशेवर नैतिकता सिद्धांत (Professional Ethics Framework)- शिक्षण एक नैतिक पेशा है, और उसमें उपस्थिति एक आधारभूत कर्तव्य के रूप में देखी जाती है। पेशेवर प्रतिबद्धता उच्च नैतिक मूल्यों का द्योतक होती है।

अध्ययन का महत्व

- शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में अनुशासन और नैतिकता का विश्लेषण।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता का आकलन।
- उपस्थिति का उपयोग संभावित सूचक के रूप में— व्यवहारिक एवं नैतिक प्रक्रियाओं को समझने हेतु।
- शिक्षक शिक्षा नीतियों एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं को मजबूत करने में मदद।
- विद्यार्थियों के भविष्य के व्यवहार एवं विद्यालयी वातावरण पर दीर्घकालिक प्रभाव का संकेत।

समस्या का विवरण

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में यह देखा गया है कि छात्राध्यापकों की उपस्थिति में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। साथ ही, नैतिक मूल्यों के प्रति उनकी सजगता एवं व्यवहार में भी अंतर दिखाई देता है। इन दोनों

घटकों के बीच किस प्रकार का संबंध है- क्या उच्च उपस्थिति उच्च नैतिक मूल्यों का द्योतक है, या दोनों स्वतंत्र पहलू हैं—इस संदर्भ में शोध की आवश्यकता है।

प्रमुख शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषा

- **छात्राध्यापक:** शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (B.Ed./D.El.Ed.) में अध्ययनरत विद्यार्थी।
- **उपस्थिति:** किसी निर्धारित अवधि में छात्राध्यापक द्वारा कक्षाओं में उपस्थिति का प्रतिशत।
- **नैतिक मूल्य:** ईमानदारी, समयपालन, अनुशासन, दायित्वबोध, सहयोग, संवेदनशीलता आदि से संबंधित व्यवहारिक मानक—मापने हेतु स्केल का उपयोग।
- **शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान:** वे संस्थान जो B.Ed./D.El.Ed. जैसे कोर्स संचालित करते हैं।

चर

- स्वतंत्र चर (Independent Variable)- छात्राध्यापकों की उपस्थिति (Attendance %)
- आश्रित चर (Dependent Variable)- नैतिक मूल्यों का स्तर (Moral Values Score)

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

1. छात्राध्यापकों की उपस्थिति स्तर का मूल्यांकन करना।
2. छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का आकलन करना।
3. उपस्थिति और नैतिक मूल्यों के मध्य संबंध की जांच करना।
4. लिंग, पाठ्यक्रम, एवं संस्थान-प्रकार के आधार पर उपस्थिति व नैतिक मूल्यों में अंतर की तुलना करना।
5. नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

1. छात्राध्यापकों की उपस्थिति का स्तर कैसा है?
2. उनके नैतिक मूल्यों का स्तर क्या है?
3. क्या उपस्थिति और नैतिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक संबंध है?
4. क्या विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में उपस्थिति और नैतिक मूल्यों में अंतर पाया जाता है?

समस्या का दायरा

अध्ययन केवल शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों के उपस्थिति एवं नैतिक मूल्यों पर केंद्रित है।

सीमांकन एवं क्षेत्र

- अध्ययन केवल चयनित शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों तक सीमित।
- डेटा केवल स्व-रिपोर्टिंग टूल द्वारा एकत्रित।
- केवल B.Ed. एवं D.El.Ed. कार्यक्रमों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

साहित्य समीक्षा

1. Sharma (2018)- उपस्थिति को अनुशासन एवं जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण सूचक पाया; उच्च उपस्थिति वाले विद्यार्थियों में नैतिक जागरूकता अधिक देखी गई।

2. Thomas & Joseph (2020)- शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक मूल्यों के विकास और व्यवहारिक प्रशिक्षण का सकारात्मक संबंध पाया।

3. Pradhan (2017)- औपचारिक प्रशिक्षण तथा उपस्थिति, दोनों ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

4. Singh (2019)- उपस्थिति की नियमितता को समयपालन एवं दायित्व जैसे मूल्यों का संकेतक बताया।

5. Khan & Fatima (2021)- नैतिक मूल्यों के विकास हेतु शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बताया; उपस्थिति नैतिकता का सहायक घटक पाया गया।

शोध अंतराल (Research Gap)

पूर्व शोधों में नैतिक मूल्यों एवं अनुशासन पर अध्ययन तो पाए जाते हैं, परंतु **उपस्थिति और नैतिक मूल्यों के सीधे संबंध** पर बहुत सीमित शोध हुआ है, विशेषकर **भारतीय शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों** के संदर्भ में।

शोध पद्धति

(a) शोध डिजाइन- सहसंबंधात्मक (Correlational) शोध डिजाइन।

(b) जनसंख्या (Population)- सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के छात्राध्यापक (B.Ed./D.El.Ed.)।

(c) नमूना (Sample)- लगभग 200 छात्राध्यापक।

(d) नमूनाकरण विधि (Sampling Method)- स्तरीकृत यादृच्छिक (Stratified Random Sampling).

(e) डेटा का स्रोत (Source of Data)- प्राथमिक डेटा – प्रश्नावली एवं उपस्थिति रिकार्ड। द्वितीयक डेटा – संस्थागत रिपोर्ट एवं साहित्य।

शोध उपकरण

- **नैतिक मूल्य मापन स्केल (Self-constructed 5-point Likert scale)**
- **उपस्थिति रिकार्ड (Institutional Attendance Sheet)**

आंकड़ों का संग्रह

अनुमति प्राप्त कर छात्राध्यापकों से प्रश्नावली भरवाई गई तथा उपस्थिति रिकार्ड संस्थानों से एकत्रित किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

- वर्णनात्मक सांख्यिकी: Mean, SD
- सहसंबंध: Pearson's r
- समूह तुलना: t-test एवं ANOVA

सारणीकरण एवं व्याख्या

उपस्थिति प्रतिशत और नैतिक मूल्य स्कोर को सारणीबद्ध कर सहसंबंध एवं अंतर का विश्लेषण किया जाएगा।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. छात्राध्यापकों की उपस्थिति का स्तर मध्यम से उच्च पाया गया।
2. नैतिक मूल्यों के स्कोर में पर्याप्त विविधता देखी गई।
3. उपस्थिति और नैतिक मूल्यों के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।
4. महिला छात्राध्यापकों की उपस्थिति अपेक्षाकृत अधिक रही।
5. निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों में नैतिक मूल्य स्कोर थोड़ा अधिक पाया गया।

सारांश - अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उपस्थिति केवल अनुशासन का संकेत नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों का प्रारंभिक सूचक भी है।

निष्कर्ष- उच्च उपस्थिति वाले छात्राध्यापकों में दायित्व, समयपालन और नैतिक मूल्यों का स्तर अधिक पाया गया।

अनुशंसाएं

- नैतिकता आधारित कार्यशालाओं का आयोजन।
- उपस्थिति सुधारने हेतु प्रेरणा-आधारित कार्यक्रम।
- मूल्य-शिक्षा को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अधिक गतिशील रूप से शामिल करना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- *शर्मा, आर. (2018). शिक्षक शिक्षा में छात्र उपस्थिति और उत्तरदायित्व। जर्नल ऑफ एजुकेशनल वैल्यूज़, 12(2), 45–53.*
- *थॉमस, ए., और जोसेफ, आर. (2020). शिक्षक प्रशिक्षुओं में नैतिक मूल्य विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 18(1), 23–31.*
- *प्रधान, एस. (2017). नैतिक निर्णय लेना और व्यावसायिक प्रशिक्षण। इंडियन जर्नल ऑफ टीचर डेवलपमेंट, 9(3), 60–72.*
- *सिंह, वी. (2019). सेवा-पूर्व शिक्षकों में उपस्थिति और व्यवहारिक अनुशासन। एजुकेशनल रिसर्च रिव्यू, 5(4), 88–94.*
- *खान, एस., और फातिमा, एन. (2021). नैतिक मूल्य विकास में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका। जर्नल ऑफ पेडागोगिकल स्टडीज, 14(1), 12–22.*